Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

सतत विकास में भारतीय ज्ञान परंपरा का वर्तमान परिदृश्य

डॉ. मोहन निमोले *

*** सहायक प्राध्यापक (भूगोल) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शासकीय माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत**

प्रस्तावना – भारतीय ज्ञान परंपरा केवल हमारे इतिहास का हिस्सा नहीं है, बल्कि आज के समय में पर्यावरण को बचाने और सतत विकास को हासिल करने का एक बहुत बड़ा जरिया बन चुकी है।

प्राचीन भारतीय दर्शन हमेशा से यह मानता आया है कि मनुष्य और प्रकृति अलग नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे पर निर्भर हैं। आइए देखते हैं कि आज के वर्तमान परिदृश्य में यह परंपरा कैसे काम आ रही है।वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण, जल संकट और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन जैसी चुनौतियों के कारण सतत विकास की आवश्यकता बढ़ गई है। ऐसे में भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतकृप्रकृति के प्रति सम्मान, संसाधनों का संतुलित उपयोग और सह-अस्तित्व की भावनाकृअधिक प्रासंगिक हो गए हैं।

1. वर्तमान परिदृश्य में मुख्य क्षेत्र

1. कृषि और मृदा संरक्षण

जैविक और प्राकृतिक खेती: आज रासायनिक खादों के नुकसान को देखते हुए देश में वैदिक कृषि और जीवामृत/पंचगव्य जैसी पारंपरिक तकनीकों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे मिट्टी की उपजाऊ क्षमता प्राकृतिक रूप से बनी रहती है।जल संचयन राजस्थान के 'जोहड़', दक्षिण भारत के 'एरी' (तालाब) और प्राचीन 'बावलियों' को आज फिर से जीवित किया जा रहा है ताकि पानी की कमी को दूर किया जा सके।

2. प्रकृति के साथ तालमेल

मिशन LiFE (Lifestyle for Environment): भारत सरकार ने वैश्विक स्तर पर 'मिशन लाइफ' की शुरुआत की है, जो पूरी तरह से भारतीय दर्शन पर आधारित है। यह हमें 'फेको और नया खरीदो' की जगह कम इस्तेमाल, पुनरू उपयोग और रीसायकल की याद दिलाता है।पवित्र उपवनरू भारत के ग्रामीण और आदिवासी इलाकों में जंगलों के कुछ हिस्सों को श्देवराईश या पवित्र मानकर काटा नहीं जाता। आज जैव-विविधता को बचाने के लिए वैज्ञानिक भी इन पारंपरिक तरीकों की तारीफ कर रहे हैं।

3. आयुर्वेद और समग्र स्वास्थ्य – वर्तमान में पूरी दुनिया आयुर्वेद और योग को अपना रही है। यह चिकित्सा पद्धति केवल बीमारी का इलाज नहीं करती, बल्कि पर्यावरण के अनुकूल जड़ी-बूटियों और जीवनशैली के जरिए बीमारियों को रोकने पर जोर देती है।

2. सरकार और शिक्षा में इसका स्थान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020)– नए पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) को विशेष रूप से शामिल किया गया है ताकि छात्र बचपन से ही प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनें।ग्लोबल लीडरशिप: 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (पूरी धरती एक परिवार है) के विचार के साथ भारत आज अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसे मंचों के जरिए दुनिया को सस्टेनेबल एनर्जी की राह दिखा रहा है।

3. पर्यावरण संरक्षण में बढ़ती भूमिका– भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति को पूजनीय माना गया है। आज वृक्षारोपण, जल संरक्षण और जैव विविधता संरक्षण जैसी गतिविधियों में इन मूल्यों को अपनाया जा रहा है।पर्यावरण संरक्षण आज केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह हर नागरिक का कर्तव्य है। यदि सभी मिलकर प्रयास करें तो हम एक स्वच्छ, सुरक्षित और संतुलित पर्यावरण बना सकते हैं, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित रहेगा।

4. सतत जीवनशैली को बढ़ावा – संयमित उपभोग, पुन: उपयोग और पुनर्चक्रण जैसे सिद्धांत भारतीय जीवन-दर्शन का हिस्सा रहे हैं। वर्तमान में इन्हें सतत जीवनशैली के रूप में वैश्विक स्तर पर महत्व मिल रहा है।सतत जीवन शैली अपनाना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि हम सभी छोटे-छोटे बदलाव करें, तो हम पर्यावरण को बचा सकते हैं और एक स्वस्थ भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। यह केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि जीवन जीने की जिम्मेदार जिम्मेदारी है।

5. पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियों का पुनर्जीवन– तालाब, बावड़ी, कुएँ और वर्षा जल संचयन जैसी पारंपरिक व्यवस्थाओं को पुन: अपनाने के प्रयास किए जा रहे हैं ताकि जल संकट का समाधान किया जा सके।पर्यावरण संरक्षण आज केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह हर नागरिक का कर्तव्य है। यदि सभी मिलकर प्रयास करें तो हम एक स्वच्छ, सुरक्षित और संतुलित पर्यावरण बना सकते हैं, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित रहेगा।

6. जैविक एवं प्राकृतिक कृषि– रासायनिक उर्वरकों के दुष्प्रभावों को देखते हुए जैविक खेती, प्राकृतिक कृषि और पारंपरिक कृषि ज्ञान को प्रोत्साहित किया जा रहा है।सतत विकास का सीधा मतलब है 'आज की जरूरतों को इस तरह पूरा करना कि आने वाली पीढ़ी के अधिकार और संसाधन खत्म न हों।' जैविक और प्राकृतिक कृषि इसी सिद्धांत पर काम करती है। यह सिर्फ खेती का तरीका नहीं, बल्कि धरती को बचाने और भविष्य को सुरक्षित रखने का एक मजबूत रास्ता है।जैविक और प्राकृतिक कृषि का सीधा संबंध हमारी धरती और आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य से है। आज के समय में जहां रासायनिक खादों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से

मिट्टी की उपजाऊ क्षमता कम हो रही है, वहीं सतत विकास को हासिल करने के लिए पारंपरिक और प्रकृति-अनुकूल खेती की ओर लौटना बेहद जरूरी हो गया है।

7. शिक्षा और शोध में समावेश- विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में भारतीय ज्ञान परंपरा तथा सतत विकास से संबंधित विषयों को शामिल किया जा रहा है।शिक्षा और शोध में समावेश और सतत विकास आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत हैं। जब हम शिक्षा और रिसर्च को समावेशी बनाते हैंकृयानी उसमें बिना किसी भेदभाव के समाज के हर वर्ग (महिलाएं, ग्रामीण क्षेत्र, आर्थिक रूप से कमजोर, और दिव्यांगजन) को शामिल करते हैंकृतब जाकर एक मजबूत और टिकाऊ समाज का निर्माण होता है।

यह विषय संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य 4 (SDG 4: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) और लक्ष्य 9 (SDG 9: उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचा) से सीधा जुड़ा हुआ है।शिक्षा और शोध में समावेश कोई 'एहसान' नहीं, बल्कि एक 'निवेश' है। जब समाज का आखिरी व्यक्ति भी ज्ञान और विज्ञान से जुड़ता है, तभी हमारा विकास वास्तविक, मजबूत और सतत बनता है।

8. जलवायु परिवर्तन से निपटने में योगदान- भारतीय परंपरा का 'प्रकृति के साथ सामंजस्य' का दृष्टिकोण जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में सहायक माना जा रहा है।जलवायु परिवर्तन से निपटना और सतत विकास को हासिल करना, ये दोनों कोई अलग-अलग रास्ते नहीं हैं। ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। संयुक्त राष्ट्र (UN) के 17 सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में से लक्ष्य 13 (Goal 13: Climate Action) सीधे तौर पर जलवायु परिवर्तन से जुड़ा है।

अगर हम आज पर्यावरण को नहीं बचाएंगे, तो आने वाले समय में न तो साफ पानी बचेगा, न खेती के लिए जमीन और न ही आर्थिक तरक्की।जलवायु परिवर्तन से निपटने और सतत विकास में योगदान देने के मुख्य स्तंभ नीचे दिए गए हैं:

1. ऊर्जा के क्षेत्र में बदलाव

नवीकरणीय ऊर्जा : कोयला, पेट्रोल और डीजल जैसे जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम करके सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, और जल विद्युत को अपनाना। यह सतत विकास लक्ष्य 7 (किफायती और स्वच्छ ऊर्जा) को भी पूरा करता है।ऊर्जा दक्षता: घरों और उद्योगों में बिजली बचाने वाले उपकरणों (जैसे स्म्व लाइट्स, 5-स्टार रेटिंग वाले उपकरण) का उपयोग करना।

2. सस्टेनेबल एग्रीकल्चर और खाद्य सुरक्षा

जैविक खेती : रासायनिक खादों और कीटनाशकों का इस्तेमाल कम करना, जिससे मिट्टी की उपजाऊ क्षमता बनी रहे और ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम हो।कम पानी वाली तकनीकरू ड्रिप इरिगेशन (टपकन सिंचाई) जैसी तकनीकों का इस्तेमाल करना ताकि पानी की बर्बादी न हो (लक्ष्य 6 और लक्ष्य 15)।

3. हरित परिवहन और पर्यावरण अनुकूल शहर

इलेक्ट्रिक वाहन : सार्वजनिक और निजी परिवहन में इलेक्ट्रिक गाड़ियों और सीएनजी को बढ़ावा देना ताकि शहरों का प्रदूषण कम हो।अपशिष्ट प्रबंधन, कचरे को रीसायकल करना और प्लास्टिक का इस्तेमाल पूरी तरह बंद करना।

4. वन संरक्षण - पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) को सोखते हैं। इसलिए बड़े पैमाने पर पेड़ लगाना और जंगलों की कटाई को रोकना जलवायु परिवर्तन से निपटने का सबसे मजबूत और प्राकृतिक तरीका है।

चुनौतियाँ - जब हम आधुनिक विकास की बात करते हैं, तो अक्सर हमारा ध्यान सिर्फ बड़ी-बड़ी इमारतों, फैक्ट्रियों, और जीडीपी पर जाता है। लेकिन आज की दुनिया जिस तेजी से पर्यावरण संकट (जैसे जलवायु परिवर्तन) और सामाजिक तनावों से जूझ रही है, उससे साफ है कि इस पश्चिमी मॉडल में कहीं न कहीं कोई कमी है।यहीं पर भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका आती है। भारतीय सोच में विकास का मतलब केवल पैसा कमाना नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर जीना रहा है।लेकिन आज के समय में इस परंपरा को अपनाने और विकास की रेस में आगे बढ़ने के बीच कई बड़ी चुनौतियां हैं:

1. अंधाधुंध विकास बनाम 'ईशा वास्यमिदं सर्वम्'

चुनौती: आधुनिक विकास 'उपभोगवाद' पर टिका हैकृयानी जितना हो सके प्रकृति का इस्तेमाल करो और सामान बनाओ।भारतीय सोचरू हमारी परंपरा कहती है कि इस सृष्टि में जो कुछ भी है, वह सब ईश्वर का है। हमें इसका उपयोग 'त्याग भाव' से करना चाहिए, लालच से नहीं (तेन त्यक्तेन भुंजीथा)। आज सबसे बड़ी चुनौती लोगों की इस मानसिकता को बदलना है कि प्रकृति हमारी दासी नहीं, बल्कि हमारी माता है।

2. आधुनिक विज्ञान और पारंपरिक ज्ञान में तालमेल की कमी

चुनौती: आज की शिक्षा व्यवस्था में पश्चिमी विज्ञान को ही एकमात्र सच मान लिया जाता है, जबकि भारत के पारंपरिक विज्ञान (जैसे आयुर्वेद, वैदिक गणित, पारंपरिक जल संरक्षण तकनीकें) को अक्सर 'पिछड़ा' या 'अंधविश्वास' कह दिया जाता है।समाधान की चुनौती: चुनौती यह है कि हम अपने प्राचीन ज्ञान को आधुनिक रिसर्च और टेक्नोलॉजी के साथ कैसे जोड़ें (जैसे खेती में बिना केमिकल के प्राचीन तरीकों से अच्छी पैदावार कैसे लें)।

3. 'सस्टेनेबल लाइफस्टाइल' को अपनाने की चुनौती

चुनौती: भारत ने दुनिया को 'लाइफ' का मंत्र दिया है, जो हमारी परंपरा से ही आता है। लेकिन जमीन पर स्थिति यह है कि हमारी नई पीढ़ी भी तेजी से वेस्टर्न लाइफस्टाइल अपना रही है, जहाँ प्लास्टिक का इस्तेमाल, पानी की बर्बादी और रेडीमेड कल्चर बढ़ रहा है। अपनी ही जड़ों से कटना सबसे बड़ी चुनौती है।

4. आर्थिक तरक्की और सांस्कृतिक मूल्यों में संतुलन

चुनौती: भारत एक विकासशील देश है। हमें गरीबी दूर करने के लिए फैक्ट्रियां लगानी होंगी, सड़कें बनानी होंगी। लेकिन चुनौती यह है कि विकास के इस चक्कर में हमारी नदियां प्रदूषित न हों, जंगल न कटें और हमारे गांव (जो भारतीय संस्कृति के मूल केंद्र हैं) शहर बनने की होड़ में अपनी आत्मा न खो दें।

1. शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण पारंपरिक ज्ञान का ह्रास।
2. उपभोक्तावादी जीवनशैली के कारण संसाधनों का अत्यधिक उपयोग।
3. युवा पीढ़ी में पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान के प्रति सीमित जागरूकता।
4. पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीक के बीच समन्वय की आवश्यकता।

निष्कर्ष - वर्तमान परिदृश्य में भारतीय ज्ञान परंपरा सतत विकास के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। इसके सिद्धांत पर्यावरण संरक्षण,

जल प्रबंधन, जैविक कृषि और संतुलित जीवनशैली को बढ़ावा देते हैं। यदि पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान और तकनीक के साथ समन्वित किया जाए, तो यह सतत और समावेशी विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकता है। निष्कर्ष: आज का वर्तमान परिदृश्य यह है कि आधुनिक विज्ञान भी अब यह मान रहा है कि पर्यावरण संकट से बचने के लिए हमें प्राचीन भारतीय ज्ञान की 'संतुष्टि और संयम' वाली सोच को अपनाना ही होगा। यह परंपरा बीते कल की नहीं, बल्कि आने वाले कल की जरूरत है।भारतीय ज्ञान परंपरा विकास का विरोध नहीं करती, बल्कि यह 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' (सबका भला हो) की बात करती है। असली चुनौती एक ऐसा 'भारतीय विकास मॉडल' तैयार करने की है, जिसमें कंप्यूटर और रोबोटिक्स भी हों, लेकिन साथ ही नदियों और पेड़ों के प्रति सम्मान भी हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. प्रभु लाल नागर. भारतीय ज्ञान परंपरा और सतत विकास एक भौगोलिक एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य. Int. J. Humanit. Educ. Res. 2026
2. March 2026,Anusanadhan A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
3. वर्मानी डॉ. साक्षी, 2023, वर्तमान परिदृश्य, में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता।
4. रावल मोहित, 2023, आधुनिक संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणालियों की उपयोगिता।
5. चेतनाइंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन।

****